

झुमरी तलैया में हनीमून-1

“ यह हनीमून सेक्स स्टोरी है एक नवविवाहित जोड़े की जिसे घर में जगह की तंगी के कारण सहवास के उचित मौके नहीं मिल रहे थे. मैंने अपने मित्र के साथ मिल कर उनकी मदद की उनकी सुहागरात मनाने में!

”

...

Story By: dinesh roht (dinesh.roht)

Posted: Monday, September 24th, 2018

Categories: [इंडियन बीवी की चुदाई](#)

Online version: [झुमरी तलैया में हनीमून-1](#)

झुमरी तलैया में हनीमून-1

दोस्तो, आप सबका तहे दिल से धन्यवाद कि आपने मेरी आपबीती तथा अड़ोस-पड़ोस में घटित घटनाओं

क्सक्सक्स फिल्म दिखा कर साली को चोदा

देवर भाभी की कामुकता और चुदाई

खो खो कोच को पटाकर चुत चुदाई

को कहानी रूप में स्वीकार किया।

मेरी यही कोशिश रहती है कि जो घटनायें हों, उन्हें व्यवस्थित कर आप तक पहुँचा दूँ।

एक बार पुनः आप सभी का धन्यवाद।

यह कहानी है एक शिक्षक दंपत्ति का जो शादी के कुछ महीने के बाद से ही सूर्यमुखी स्टेज में आ गये थे।

सूर्यमुखी नहीं समझे ?

अच्छा चलिये मैं ही समझा देता हूँ :

शादी के बाद की तीन अवस्थायें हैं

1. चन्द्रमुखी : जब अपनी बीवी बहुत प्यारी लगती है, उसकी डाँट झगड़ा भी शहद से लिपटा प्रतीत होता है.
2. सूर्यमुखी : जब बीवी और आप बात बात पर लड़ने लगे, दोनों यह जताने का कोशिश करे कि वही सही है.
3. ज्वालामुखी : जब घर की पूरा लगाम आपके बीवी के पास और आप असहाय प्राणी मात्र रह जायें; दूसरे की गलती की डाँट आप खाने लगे, आप प्रतिरोध तक नहीं कर सकें आदि आदि।

अगर कहीं उलट होता हो तो आप रत्न हैं।

यह घटना कुछ यों घटित हुयी।

मेरा स्थानांतरण राँची से दूर एक कस्बे में हो गया था। कस्बा यानी न पूर्ण शहर न पूर्ण गाँव। कभी बिजली गायब तो कभी पानी ... पर विकल्प सबके हमेशा मौजूद। बिजली गायब तो जेनरेटर सुविधा, पानी गायब तो मिनरल वाटर वाले आपके घर तक पानी देने की गारंटी के साथ उपलब्ध आदि।

यों कहें तो इक्कीसवीं सदी में भी आत्मीयता इन्हीं जगहों पर मिलती है। आधे लोग आपको जानने लग जाते हैं और जो नहीं जान पाते वे सौ साल बाद भी नहीं जान पायेंगे। वह शहर ही क्या जहाँ बगल के फ्लैट में कौन रहता उसकी जानकारी भी न मिले। अपनापन मिलता है इन कस्बों में ... दिन भर में बीसेक लोग अभिवादन कर कुशलक्षेम पूछ लेते हैं बदले में आप भी दो वाक्य उससे बात कर तरोताजा हो जाते हैं। घर बाहर से लेकर देश दुनिया की खबर सब मिल जाती है। न समाचार पत्र की जरूरत और न टी वी की।

जिस मकान में मैंने किराये पर रहना शुरू किया वो एक शिक्षक का मकान था। श्री दीपक तिवारी। नाम सुना सुना लग रहा था ?

पहले माह का किराया उन्हें देने गया तो कौतुहल वश पूछ ही दिया- अगर आप बुरा न मानें तो क्या आप रतनपुर स्कूल में पढ़ें हैं ?

उन्होंने आश्चर्यचकित होते हुए पूछा- आपको कैसे मालूम ?

“तुम दिपुआ हो ना ?”

इज्जत से बुलाना निषेध था दोस्तों के बीच !

अपने स्कूल के नाम से पुकारे जाने की खुशी का भाव तथा आश्चर्य दोनों एक साथ मास्टर

साहब के चेहरे पर आ जा रही थी।

मैं हूँ तुम्हारा दीनू!

सभी का अलंकृत नाम था, वही नाम अभी भी सभी के जेहन में था.

“अरे दिनेश भाई!” कहते हुये गले से लिपट गये। आखिर बिछुड़े हुये यारों का मिलन जो हो रहा था। भावना हावी हो रही थी, दोनों की आँखें आँसुओं से भर गयी थी। करीब पाँच दस मिनट के बाद हम लोग स्थिर हुये तो अपने स्कूल के दिनों को याद करने लगे एक एक के बारे में।

वो मेरा किराया लौटाने लगा तो मैंने कहा- दोस्ती अपनी जगह, किराया अपनी जगह! नहीं लिये तो एक बोझ हमेशा दिल पर रहेगा। अच्छा रहने दो यह तो भौजाई का हुआ। भौजाई को भाभी कह नहीं सकता था क्योंकि भाभी कहने में दूरियाँ महसूस होती है दोस्तों के बीच में।

और मेरी भौजाई न जाने कब पीछे से आकर हम लोगों का भरत मिलाप देख रही थी।

वो हँसी, बोली- आप सब लंगोटिया यार ऐसे ही हैं क्या? आप लोगों के बारे में न जाने कितनी बार बोले हैं, चेहरा किसी का नहीं पहचानती पर नाम और आप लोगों की खुराफातें एक एक मालूम हैं। चलिये आज के बाद से अपना किराया मुझे ही देंगे।

पर दीपक के हाव-भाव से लगा कि वो थोड़ा दुखित हो गया।

पर भौजाई ने भी शर्त रख दी- आपका खाना हमारे यहाँ कोई दाई वाई नहीं बनायेगी।

दोस्त के चेहरे पर मुस्कान तैर गयी कि धर्मपत्नी ने उनकी इज्जत बढ़ा दी।

मुझे मजबूरन शर्त मानना पड़ा। एक तरह से मेरा मन भी भाभी ने रख ली और पति को धर्मसंकट से भी बचा ली।

श्री तिवारी, विगत दस वर्षों से अपने स्कूल के प्रधानाध्यापक हैं। बहुत ही मेहनती, उनके

मेहनत का ही कमाल है कि उस कस्बे में एक भी प्राइवेट स्कूल बन नहीं पाया। उसे साथी शिक्षक भी सभी मेहनती ही मिले जो लगन से बच्चों को पढ़ाते हैं। जिसका परिणाम था कि वो सभी को जानते थे और सभी उन्हें जानते और कद्र करते। उसके कारण बहुत जल्दी ही सब हमें भी पहचानने लगे थे।

पिछले महीने उनके स्कूल में एक नवविवाहिता जोड़े का पदस्थापन हुआ था। सभी उधेड़ उम्र के मास्टर्स के दिल में गुदगुदी होने लगी थी। महिला शिक्षकों को गप्पों का नया टॉपिक मिल गया था, लेकिन गप्पें केवल मध्यावकाश में ही ; अनुशासन सभी के लिये समान रूप से शिक्षक और विद्यार्थी पर लागू था।

सभी इन दोनों से कुछ न कुछ पूछते रहते पर ये दोनों कुछ भी बताने से कतराते रहे। उन दोनों का एक दूसरे के प्रति रुखा व्यवहार सभी के गले के नीचे नहीं उतर रही थी। उन दोनों के बीच कुछ तो था जो सभी को अखर रहा था। नवदंपति की तरह कौतुहल आकर्षण कुछ तो कम था दोनों के बीच। अभी अभी शादी हुई है पर चंद्रमुखी स्टेज को पार करते हुए कभी सूरजमुखी तो कभी ज्वालामुखी स्टेज पर दोनों आ गये थे, इससे स्कूल का माहौल भी खराब हो रहा था।

सभी ने जानने की कोशिश की पर असफल रहे। उसके बाद सभी उन दोनों से दूर-दूर रहने लगे थे।

हमारे मास्टर साहब इससे बहुत परेशान रह रहे थे। अभी तक तो यही था कि ऐसा कौन सा झगड़ा हो जो हमारे मास्टर साहब ने सुलझाया न हो, चाहे वह स्कूल का मामला हो या घर का।

इन दोनों के घर पर सब सामान्य था, शादी से पहले दोनों खुशमिजाज प्राणी थे। तो फिर ...

इसी उधेड़ बुन में मास्टर साहब ने यह बात खाते समय हमें बतायी।

भाभी कहने लगी- समय के साथ सब ठीक हो जायेगा, शुरु में कुछ दंपतियों में ऐसा होता है।

पर हमारे मास्टर साहब उनके पीछे पड़े हुये थे, वो मुझे बोले- कुछ करो यार ... स्कूल का माहौल खराब हो रहा है।

मैंने पूछा- इन दोनों के बीच कोई तीसरे की कहानी तो नहीं है न ?

तो हमारे जनाब ने कहा- नहीं, दोनों का पुराना कोई लव अफेयर्स वाला किस्सा नहीं है।

हमने कहा कि चलते हैं उसके घर ... शायद हल वहीं हो।

रविवार को हम दोनों उनके घर धमक पड़े। दोनों नवदंपति, सुधीर और सुंदरी के साथ उनके माँ बाप भी आश्चर्यचकित थे कि सर अचानक से कैसे आ गये ?

तिवारी जी बोले- हम लोग इधर से गुजर रहे थे तो सोचा चलते हैं, आपका घर देख लेते हैं।

खूब आव भगत हुयी ... पर गर्म जोशी गायब थी। घर में भी तनाव व्याप्त था।

जाते समय तिवारी जी बोले- क्या अपना घर नहीं दिखाओगे ?

वे लोग खुशी से अपना घर दिखाने लगे। हम दोनों ने उनके पूरे घर का मुआयना किया।

घर में वैसे तो चार कमरे थे पर वास्तविकता में मात्र दो रूम ही सोने लायक थे, शेष में सामान भरा हुआ था और घर में थे सदस्य सात।

अब आप कल्पना कर सकते हैं कि सभी कैसे सोते होंगे।

नवदंपति को शायद प्राइव्सी नहीं थी।

हम दोनों घर वापस आये तो तिवारी जी भन्नाये हुये थे, उन्हें कोई हल दिखा नहीं। वो मेरी तरफ आशा भरी निगाहों से देखते हुये पूछने लगे- कुछ समझ में आया ?

मैंने कहा- मास्टर, हल तो तुम्हें निकालना है. अभी तक पूरे मोहल्ले की पंचायत तुम

लगाते थे, तुम जानो ; मैं इसमें पड़ कर तुम्हारा नाम क्यों खराब करूँ।
वो भन्नाते हुये बोले- न ... कुछ नहीं सूझ रहा है, तुम्हीं कुछो कहो। अपने खुराफाती
दिमाग को लगाओ ; बस इस समस्या का हल निकालो।

मैं सीधे मुद्दे पर आते हुये बोला- देख भाई, मुझे तो लगता है कि दोनों पति पत्नी तो हैं पर
दोनों के बीच चुदायी वुदायी कुछ ज्यादा होती नहीं है तो दोनों भन्नाये रहते है, जैसा मैं
सोच रहा हूँ। दो कमरे हैं और सात प्राणी, उन दोनों के कमरे में भी एक दीवान अलग से
लगा था तो मामला साफ है कि उन दो के अलावा कोई और भी कमरे में सोता है. तो सोचो
उन दोनों का प्रणय मिलन कैसे होता होगा। अगर साथ दो तो थोड़ा झूठ बोलकर दोनों को
बाहर भेज दो।

पहले तो हमारे दोस्त ठहरे जात के मास्टर ; तो चुदायी शब्द सुनते ही बमक(गुस्सा) गये,
बोले- तुमको औरो कुछ सूझता नहीं है क्या रे इत्ते बड़े हो गये हो ; अभी भी सुधरने का
नाम नहीं ले रहे हो।

मैंने कहा- देख तिवारी... होगा तुम मास्टर अपने स्कूल का, और पंच पूरे कस्बे का ; पर जो
मुझे समझ में आया वो कहा. तूने देखा नहीं क्या ? दो कमरों में सात-सात सदस्य सो रहे हैं
तो नये नये लोग कैसे सोते होंगे और वो करते होंगे ? सोचो सोचो... हर्ज क्या है इस पर
अमल करने में ?

मेरी भौजायी मेरा भरपूर समर्थन करते हुये बोली- अब हम लोग वाला जमाना तो रहा
नहीं कि इसके लिये मौका ढूँढते थे, अब तो बच्चे को अलग कमरा चाहिये। तो क्या हर्ज है
एक बार देवर जी की बात मानने में।

अब मास्टर को दूसरी चिंता सताने लगी, कहने लगा- देख भाई, दोनों है नियोजित
शिक्षक... सैलरी तो ज्यादा है नहीं, पता चला कि एक माह की दोनों का सैलरी तुम्हारे
चक्कर में स्वाहा हो गयी।

मैंने कहा- अबे साले, जुगाड़ पर तो दुनिया चलती है। जुगाड़ लगा देंगे दो तीन हजार में ही काम चल जाएगा ; बोलो तो बताऊँ ?

उसके हामी भरते ही मैं चालू हो गया- देखो, हमारी जुगाड़ झुमरी तलैया तक ही है उससे आगे नहीं। मौर्या बस के मालिक का बेटा तुम्हारे स्कूल में पढ़ता है तो आना जाना मुफ्त। झुमरी तलैया में छाबड़ा होटल अपने साथ जो सरदार पढ़ता था, अब उसका कमान उसके हाथ में है ; तुम एक चिट्ठी दे देना, किराया कुछ कम कर ही देगा, केवल खाने पीने का खर्च लगेगा। जब तक वो दोनों बाहर रहेंगे, तब तक उनके घर में उन दोनों के लिए एक सेपरेट रूम की व्यवस्था करवा दी जाएगी।

दूसरे दिन अपने तिवारी जी ने स्कूल में एलान कर दिया कि झुमरी तलैया में दो शिक्षकों को इस स्कूल से सेमिनार में हिस्सा लेना है, इच्छुक शिक्षक अपना नाम दे सकते हैं।

पता नहीं महिला शिक्षिकाओं का छठी इंद्री हमेशा जागृत रहती है क्या ?

यह सभी महिलाओं के साथ है कि लिफाफा देख कर मजमून भाँप लेती हैं; उन लोगों ने हेडमास्टर की मंशा को तुरंत भाँप ली और एक स्वर में बोली- सर सुधीर और सुंदरी को भेज दें, हम लोग बहुत सेमिनार में भाग ले चुके हैं, इनके लिये नया है तो ये दोनों ही जायेंगे।

एक दो मंद बुद्धि शिक्षकों ने हाथ उठाने की कोशिश भर की थी कि सभी शिक्षक एक साथ उन दोनों पर टूट पड़े थे, उन लोगों की आवाज गले में ही दब कर रह गयी।

वे दोनों सुधीर और सुंदरी हेडमास्टर साहब के कमरे में प्रवेश करके बोले- सर जाने की इच्छा तो है पर...

तिवारी जी सर उठाते हुए बोले- चिंता करने की जरूरत नहीं है, मौर्या बस के मालिक को कह दिया है मैंने, कम किराया लगेगा ; और झुमरी तलैया में छाबड़ा होटल के मालिक को पत्र लिख रहा हूँ वहाँ भी कम खर्च में ही रूम मिल जाएगा.

“और हाँ...” सुधीर की तरफ मुखातिब होकर बोले- थोड़ा दिनेश से मिलते जाना, छाबड़ा उसका दोस्त ज्यादा था।

सुधीर मेरे पास आया, कहा- सर, सर ने भेजा है आपके पास!

तो मैंने उसको कहा- देख भाई, तिवारी जी तुम्हारे प्रधानाध्यापक हैं पर मैं नहीं... जो मैं कह रहा हूँ, ध्यान से सुनो, शरमाना नहीं क्योंकि तुम वयस्क भी हो और शादीशुदा भी। वहाँ पर कोई सेमिनार नहीं है, हम लोगों को लग रहा है कि तुम्हें और सुंदरी को थोड़ा एकांत, एक दूसरे को समझने का समय और स्पेस चाहिये तो तुम दोनों को बहाने से भेजा जा रहा है तो कोई बोझ लेकर मत जाओ. अब मसूरी मनाली तो भेज नहीं सकता, तो तलैया को ही मसूरी समझ लेना. और हाँ, जितना फैंटेसी तुम दोनों अपने जवानी में सोचे होंगे, सब करना ... झिझक महसूस मत करना और न किसी को हतोत्साहित ही करना। और एक शर्त है कि आकर थोड़ा विस्तार से हमें बताना, हम भी अपनी जवानी जी लेंगे!

सुधीर सिर नीचे किये ही बोला- जी सर!

“इसे तुम अपना हनीमून ट्रिप ही समझना हम दोनों की तरफ से... तो अगला एक सप्ताह जमकर जिंदगी जियो।”

दूसरे दिन जोड़ा तो फुर्र हो गया पर अपने तिवारी जी को सभी निगाहें प्रशंसा में घूरे जा रही थी. बेचारे तिवारी जी उन आँखों का बोझ नहीं उठा सके, सब यही सोच रहे थे कि सर तो छुपे रुस्तम निकले. तो वे बिना देर किये उगल दिये- देखो भाई लोगो, यह प्लान मेरे दोस्त दिनेश का है, तो मेरी तरफ इस तरह से न देखें।

पूरे मध्यावकाश में इसी पर चर्चा होते रही, तब जाकर दोनों मंदबुद्धि शिक्षक को समझ में आयी कि उन दोनों को सेमिनार में भाग लेने से क्यों रोका जा रहा था.

दोनों ही झेंप गये थे जानकर।

सप्ताह भर बाद दोनों अपने प्रधानाध्यापक से मिलने घर आये, दोनों की जुगलबंदी ही बता रही थी कि अब फिर से चंद्रमुखी स्टेज में आ गये हैं, पहले जो दूर दूर चलते थे अब दोनों एक दूसरे का हाथ पकड़ कर चल रहे थे, शरीर आपस में टकराते चल रहे थे और सबसे ज्यादा दोनों के चेहरे पर तृप्ति का भाव बता रहा था कि दोनों ने मन भर कर चुदायी की है।

कहानी जारी रहेगी.

प्रिय पाठको, आपको कैसी लगी यह रचना ? जरूर बताइयेगा।

dinesh.roht@gmail.com

कहानी का अगला भाग : [झुमरी तलैया में हनीमून-2](#)

Other stories you may be interested in

मेरे पति का दोस्त मेरा दीवाना-2

कहानी का पिछला भाग : मेरे पति का दोस्त मेरा दीवाना-1 मगर सच यह था कि मैं उसके लंड को सिर्फ छू कर ही इतनी गर्म हो चुकी थी कि मेरा अभी सेक्स करने को दिल कर रहा था, मगर अभी [...]

[Full Story >>>](#)

झूमरी तलैया में हनीमून-2

कहानी का पहला भाग : सप्ताह भर बाद दोनों अपने प्रधानाध्यापक से मिलने घर आये, दोनों की जुगलबंदी ही बता रही थी कि अब फिर से चंद्रमुखी स्टेज में आ गये हैं, पहले जो दूर दूर चलते थे अब दोनों एक [...]

[Full Story >>>](#)

मेरे पति का दोस्त मेरा दीवाना-1

दोस्तो, मैं आप सब की प्यारी प्यारी प्रीति शर्मा ! आज मैं आपको अपने एक दीवाने की बात बताने जा रही हूँ । दरअसल ये दीवाना मेरे ही पति का दोस्त है, बहुत पुराना दोस्त है, हमारी शादी से इसका हमारे घर [...]

[Full Story >>>](#)

वासना के पंख-3

दोस्तो, आपने पिछले भाग में पढ़ा कि कैसे मोहन ने अपनी सुहागरात पर यह जाना कि उसे कुंवारी लेकिन बहुत ही वासना से भरी चुदक्कड़ और शायद थोड़ी अनुभवी पत्नी मिली है । वो उसे अपने दोस्त के साथ मिल कर [...]

[Full Story >>>](#)

जनरल बोगी का सफर

मेरे अत्यंत प्रिय पाठक-पाठिकाओ, काफी लंबे अंतराल के पश्चात आज पुनः आपकी सेवा में एक नितांत अनूठे, अविस्मरणीय और आश्चर्यजनक किन्तु सुखद हादसे की प्रस्तुति कर रहा हूँ । इस कहानी से पूर्व मेरी पिछली कहानी पेट से नीचे की भूख [...]

[Full Story >>>](#)

